

नरकगति नामकर्मकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम आवली प्रमाण है। तिर्यग्गति नामकर्मकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। मनुष्य गतिकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। मनुष्यगतिकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तीन पल्य प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। देवगतिकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है। शेष नामकर्मोंकी भी उक्त उदीरणाओंके कालकी प्ररूपणा जानकर ले जाना चाहिये।

णीचागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। उच्चागोदस्स अप्पदरउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे-छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि ^(अ-का प्रत्योः 'सादिरेयाणि' इति पाठः।)। अवट्ठिदउदीरणा जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवमेयजीवेण कालो समत्तो।

नीच गोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। ऊँच गोत्रकी अल्पतर उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम दो छ्यासठ सागरोपम प्रमाण है। उसकी अवस्थित उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंतर्मुहूर्त प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा काल समाप्त हुआ।

एयजीवेण अंतरं कालादो साधेदूण भणियव्वं। णाणाजीवेहि भंगविचओ -- जे जं पयडिं वेदंति तेसु पयदं। अवेदएहि अब्ववहारो। णाणावरणीयपंचयस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्ठिद-

उदीरया णियमा अत्थि । सव्वाओ पयडीओ णाणाजीवेहि एवं जाणिदूण भणिदव्वाओ । णाणाजीवेहि कालो अंतरं च जाणिदूण भणिदव्वं ।

एक जीव की अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा कालसे सिद्ध करके कहलाना चाहिए। नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय -- जो जीव जिस प्रकृतिका वेदन करते हैं वे प्रकृत हैं। अवेदकोंका व्यवहार नहीं है। पाँच ज्ञानावरणीयके भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदीरक नियमसे है। इसी प्रकारसे सब प्रकृतियोंके विषय में नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयका कथन जानकर करना चाहिए। नाना जीवोंकी अपेक्षा काल और अन्तरका कथन भी जानकर करना चाहिए।

अप्पाबहुगं -- सव्वत्थोवा णाणावरणपंचयस्स भुजगारउदीरया जीवा, अवट्टिदउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पउदीरया संखेज्जगुणा। एवं चत्तारिदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवोदयणामपयडीणं च वत्तव्वं। सव्वत्थोवा णिद्वाए भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं सेसचदुण्णं दंसणावरणीयाणं । सादासादाणं णिद्वाभंगो ।

अल्पबहुत्व -- पाँच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके भुजाकार उदीरक जीव सबसे स्तोक हैं, उनसे अवस्थित उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार चार दर्शनावरणीय, पाँच अन्तराय और धुवोदयी नामप्रकृतियोंके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्व का कथन करना चाहिए। निद्रा दर्शनावरणके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, उनसे अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं। उनसे अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, उनसे अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके विषय में प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिये। साता व असाता वेदनीयकी प्रकृत अल्पबहुत्व प्ररूपणा निद्रा दर्शनावरणके समान है।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स (ता प्रती 'अवत्तव्वउदीरया, (अप्पदरउदीरया) असंखेज्जगुणा, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मत्तस्स' इति पाठ।) सव्वत्थोवा अवट्टिदउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा।

सोलसण्णं कसायाणमण्णदरस्स कसायस्स सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। एवं हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं। इत्थि-पुरिसवेदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अनंतगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक उनसे अनन्तगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्वके अवस्थित उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। सोलह कषायोंमें अन्यतर कषायके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साके विषयमें इस अल्पबहुत्व का कथन करना चाहिए। स्त्री और पुरुष वेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। नपुंसकवेदके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनंतगुणे हैं, अवस्थित उदीरक संख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं।

आउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, अप्पदरउदीरया असंखेज्जगुणा। णिरयगइणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया (ता प्रतौ 'सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगार० असंखे०, अवट्ठिद० इति पाठः।) असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। मणुसगइणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया संखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। जहा णवुंसयवेदस्स तहा तिरिक्खगइणामाए। देवगईए णिरयगइभंगो। ओरालियसरीरणामाए सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरणामाए देवगदिभंगो। संटाण-संघडणाणं ओरालियसरीरभंगो।

आयु कर्मोंके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, अल्पतर उदीरक असंख्यातगुणे हैं। नरकगति नामकर्मके भुजाकार उदीरक सब से स्तोक हैं, अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। मनुष्यगति नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर संख्यातगुणे हैं। जैसे नपुंसकवेदके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही तिर्यचगति नामकर्मके विषयमें भी उसे करना चाहिये। देवगतिकी प्रकृत प्ररूपणा नरकगतिके समान है। औदारिकशरीर नामकर्मके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीर नामकर्मकी यह प्ररूपणा देवगतिके समान है। संस्थानों और संहननोंकी प्ररूपणा औदारिक शरीरके समान है।

णिरयाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया। एवं मणुस्स-देवाणुपुव्वीणं। तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए सव्वत्थोवा भुजगारउदीरया। अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया विसेसाहिया। उवघाद-परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थापसत्थविहायगदि-तस-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सुहदुहपंचय-उच्चागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया असंखेज्जगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा। अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। थावर-णीचागोदाणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया, भुजगारउदीरया अणंतगुणा, अवट्टिदउदीरया असंखेज्जगुणा, अप्पदरउदीरया संखेज्जगुणा। सेसअवुत्तपयडीणं पि जाणिरुण भणियव्वं। एवं भुजगारो समत्तो।

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक विशेष अधिक हैं। इसी प्रकारसे मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके विषयमें प्रकृत प्ररूपणा करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मके भुजाकार उदीरक सबसे स्तोक हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवक्तव्य उदीरक संख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक विशेष अधिक हैं। उपघात, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर,

सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुह-दुहपंचक (सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और यशकीर्ति) और उच्च गोत्र; इनके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। स्थावर और नीचगोत्रके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं, भुजाकार उदीरक अनंतगुणे हैं, अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं, अल्पतर उदीरक संख्यातगुणे हैं। यहाँ जिन शेष प्रकृतियोंका उल्लेख नहीं किया गया है उनके विषयमें भी उपर्युक्त अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिए। इस प्रकार भुजाकार समाप्त हुआ।

पदणिक्खेवो वुच्चदे -- सब्बत्थोवा उक्कस्सिया हाणी। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडयग्गहणादो। उक्कस्सिया वड्डी अवट्ठाणं च विसेसाहिया। कुदो? उक्कस्सट्ठिदिखंडयादो द्विदिबंधुक्कस्सवड्डीए विसेसाहियदंसादो। जहणिया वड्डी हाणी अवट्ठाणं च तिण्णि तुल्लाणि, एगट्ठिदिपमाणत्तादो। वड्ढि-उदीरणाए सामित्तं कालो अंतरं णाणाजीवेहि भंगविचओ कालो अंतरं च जाणिदूण कायव्वं।

पदनिक्षेपका कथन करते हैं --उत्कृष्ट हानि सबसे स्तोक है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिकाण्डकका कथन ग्रहण है। उत्कृष्ट बुद्धि व अवस्थान विशेष अधिक है, क्योंकि उत्कृष्ट स्थितिकाण्डककी अपेक्षा स्थितिबन्धकी उत्कृष्ट वृद्धि विशेष अधिक देखी जाती है। जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान ये तीनों ही समान हैं; क्योंकि, वे एक स्थितिप्रमाण हैं। वृद्धिउदीरणाके स्वामित्व, काल, अंतर और नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय, काल तथा अन्तरका जानकर कथन करना चाहिए।

अप्पाबहुदं कीरदे। तं जहा -- सब्बत्थोवा णाणावरणीयस्स असंखेज्जगुणहाणित्थीरया। संखेज्जगुणहाणित्थीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणित्थीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवट्ठित्थीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवट्ठित्थीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवट्ठित्थीरया अणंतगुणा (म प्रतौ 'संखेज्जभागवट्ठित्थीरया असंखे० गुणा संखेज्जभागवट्ठित्थीरया संखेज्जगुणा असंखेज्जभागवट्ठित्थीरया असंखेज्जगुणा' इति पाठः।)। अवट्ठित्थीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणित्थीरया संखेज्जगुणा। एवं पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचंतराइयाणं धुवउदीरणासव्वणामपयडीणं च वत्तव्वं।

अल्पबहुत्वका कथन किया जाता है। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणीयकी असंख्यात गुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनंतगुणे हैं। अवस्थितउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। इस प्रकार पाँच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पाँच अंतराय और ध्रुव उदीरणावाली सब नामप्रकृतियोंके विषयमें प्रकृत अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिए।

णिद्वाए वेदओ द्विदिघादं ण करेदि। णिद्वाए वेदओ द्विदिबंधं बंधदि। असादस्स चउट्टाणियजवमज्झादो संखेज्जगुणं अंतोकोडाकोडीए हेडुदो बंधंतो वि सादस्स तिट्टाणिय-चदुट्टाणियाणि ण बंधदि, दुट्टाणियाणि चेव बंधदि। एदं (ता प्रती 'एवं' इति पाठः।) णिद्वाद्विदिउदीरणावड्ढिअप्पाबहुअस्स साहणं भणिदं। अप्पाबहुअं। तं जहा -- सव्वथोवा णिद्वाए संखेज्जभागवड्ढिउदीरया। संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा। अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा। अवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहानिउदीरया संखेज्जगुणा। एवं पयला-णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पि वत्तव्वं।

निद्राका वेदक स्थितिघातको नहीं करता है। निद्राका वेदक स्थितिबन्धको बाँधता है। वह असातावेदनीयके चतुःस्थानिक यवमध्यसे संख्यातगुणे हीन अन्तःकोडाकोडीके नीचे स्थितिबन्धको बाँधता हुआ भी साता वेदनीयके त्रिस्थानिक व चतुःस्थानिक स्थितिबन्धको नहीं बाँधता है, किंतु उसके द्विस्थानको ही बाँधता है। यह निद्राकी स्थिति-उदीरणाके अल्पबहुत्वका साधन कहा है। उसका अल्पबहुत्व कहा जाता है। यथा -- निद्राके संख्यातभागवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकारसे प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिके विषयमें भी प्रकृत अल्पबहुत्व कहना चाहिए।

सव्वत्थोवा सादस्स संखेज्जगुणहाणुदीरया । संखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा ।
संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा ।
असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा । अवड्ढिउदीरया
असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा । असाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-
अरदि-सोग-भय-दुगुच्छाणं सादभंगो । णवरि चदुसंजलणाणमसंखेज्जगुणवड्ढि-हाणुदीरया वि
अत्थि । ते एत्थ ण विवक्खिया ।

साता वेदनीयके संख्यातगुणहानुदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातभागहानुदीरक
संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक
संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक अनंतगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं ।
अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानुदीरक संख्यातगुणे हैं । असातावेदनीय,
सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी यह प्ररूपणा सातावेदनीयके
समान है । विशेष इतना है कि चार संज्वलन कषायोंके असंख्यातगुणवृद्धि और
असंख्यातगुणहानुदीरक भी होते हैं । परन्तु उनकी यहाँ विवक्षा नहीं की गयी है ।

मिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया । संखेज्जगुणहाणुदीरया असंखेज्जगुणा ।
संखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा ।
संखेज्जभागवड्ढिउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया अणंतगुणा । अवड्ढिउदीरया
असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छत्तस्स सव्वत्थोवा
अवत्तव्वउदीरया । असंखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा । सम्मत्तस्स सव्वत्थोवा
असंखेज्जभागहाणुदीरया । अवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवड्ढिउदीरया
असंखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवड्ढिउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवड्ढिउदीरया
संखेज्जगुणा । एदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागछेदणएहि ओवड्ढिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणं ।
संखेज्जगुणहाणुदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो? आवलियाए असंखेज्जदिभागछेदणएहि
ओवड्ढिदसम्मत्तपवेसणरासिपमाणत्तादो । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । कुदो?
सम्मत्तपवेसणरासिगहणादो । संखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया णाम
एगसमयपवेसया, संखेज्जभागहाणुदीरया पुण सव्वो पविट्ठरासी अंतोमुहुत्तस्संतो संखेज्जवारं

संखेज्जभागवद्धिखंडयघादओ, तेण संखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा ।
असंखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा ।

मिथ्यात्वके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यात भागवृद्धिउदीरक अनंतगुणे हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। सम्यक्त्वप्रकृतिके असंख्यातभागगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवस्थित उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। ये पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिप्रमाण हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि वे आवलिके असंख्यातवें भागमात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिप्रमाण हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि वे आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र अर्धच्छेदोंसे अपवर्तित सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवों की राशिप्रमाण हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, यहाँ सम्यक्त्वमें प्रविष्ट होनेवाले जीवोंकी राशिका ग्रहण है। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। इसका कारण यह है कि अवक्तव्यउदीरक एक समयमें प्रविष्ट होनेवाले जीव हैं, परंतु संख्यात भागहानिउदीरक अंतर्मुहूर्तके भीतर संख्यात वार संख्यातभागवृद्धिकांडकोंकी घातक सब प्रविष्ट राशि है। इसलिए संख्यातभागहानिउदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं।

इत्थिवेदस्स सव्वत्थोवा असंखेज्जगुणहाणुदीरया ^{(का प्रतौ 'असंखेज्जगुणहाणि', ता प्रतौ 'असंखे० (गुणा गुणहाणि०' इति पाठः।)} । अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा । संखेज्जभागवद्धिउदीरया संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणवद्धीए संखेज्जगुणा । संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा । संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवद्धीए उदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । पुरिसवेदस्स इत्थिवेदभंगो । णवरि असंखेज्जगुणवद्धिउदीरया वि अत्थि, ते एत्थ ण विवक्खिया ।

गंथाहिष्पाओ जाणिय वत्त्वो। णवुंसयवेदस्स सव्वत्थोवा असंखज्जगुणहाणुदीरया। संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए उदीरया संखेज्जगुणा। कुदो? असण्णिपंचिंदिय-बीइंदिय-चउरिंदिएसु सण्णिपंचिंदिएसु च संखेज्जभागहाणीए संभवुवलंभादो। संखेज्जगुणवड्डीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्डीए उदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्डीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा।

स्त्रीवेदके असंख्यात गुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्य उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धि उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। पुरुषवेदकी यह प्ररूपणा स्त्रीवेदके समान है। विशेष इतना है कि उसके असंख्यातगुणवृद्धिउदीरक भी हैं। किंतु उसकी विवक्षा यहाँ नहीं की गयी है। ग्रंथका अभिप्राय जानकर कथन करना चाहिए। नपुंसकवेदके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। कारण यह कि असंज्ञी पंचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय तथा संज्ञी पंचेन्द्रियों में संख्यातभागहानिकी संभावना पायी जाती है। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनन्तगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि के उदीरक संख्यातगुणे हैं।

देव-णिरयाउआणं सव्वत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। असंखेज्जभागहाणुदीरया असंखेज्जगुणा। तिरिक्ख-मणुस्साउआणं चत्तारि पदाणि, तेसिं जाणिय वत्तव्वं। णिरयगईए सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्डीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणुदीरया संखेज्जगुणा (का प्रतौ 'सव्वत्थोवा संखेज्जगुणवड्डीए उदीरया संखेज्जगुणा' इति पाठः।)। संखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्ठिउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ठिउदीरया संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणुदीरया

संखेज्जगुणा, संखेज्जवासाउअरासीए पाहणियादो। देवगदिणामाए णिरयगइभंगो।
तिरिक्खगइणामाए सब्बत्थोवा संखेज्जगुणहाणीए उदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा।
संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्डीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्डीए
संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्डीए अणंतगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा।
असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। मणुसगदीए सब्बत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया।
संखेज्जगुणहाणुदीरया संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणुदीरया संखेज्जगुणा।
अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्ठिउदीरया संखेज्जगुणा।
संखेज्जभागवड्ठिउदीरया संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्ठिउदीरया संखेज्जगुणा।
अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। ओरालियसरीरस्स
सब्बत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। (का प्रतावतः प्राक् 'संखेज्जगुणा' इत्येतदधिकं पदमुपलभ्यते।)
संखेज्जगुणहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्डीए
संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया अणंतगुणा। असंखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया
असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरस्स णिरयगइभंगो।
आहारसरीरस्स सब्बत्थोवा अवत्तव्वउदीरया। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा।
ओरालियसरीरअंगोवंगस्स सब्बत्थोवा असंखेज्जगुणहाणीए उदीरया। संखेज्जगुणहाणीए
असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए असंखेज्जगुणा (ता प्रतो 'असंखे० (गुणा-)' इति पाठः।।)
संखेज्जगुणवड्डीए असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया
असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया असंखेज्जगुणा।
असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। आहारसरीरअंगोवंगस्स आहारसरीरभंगो।
वेउव्वियसरीरअंगोवंगस्स वेउव्वियसरीरभंगो। समचउरससंटाणस्स सब्बत्थोवा
असंखेज्जगुणहाणीउदीरया (संखेज्जगुणहाणी०) असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्डीए
असंखेज्जगुणा। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जगुणवड्डीए संखेज्जगुणा।
संखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। असंखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणा। अवट्ठिदउदीरया
असंखेज्जगुणा। असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा। णग्गोहपरिमंडलसंटाणस्स सब्बत्थोवा
असंखेज्जगुणहाणुदीरया। अवत्तव्वउदीरया असंखेज्जगुणा। संखेज्जभागवड्डीए संखेज्जगुणा।
संखेज्जगुणवड्डीए संखेज्जगुणा। संखेज्जगुणहाणीए संखेज्जगुणा। संखेज्जभागहाणीए

संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवद्धीए संखेज्जगुणा । अवद्धिदउदीरया असंखेज्जगुणा ।
 अवद्धिदउदीरया असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए संखेज्जगुणा । एवं सादिय-वामण-
 कुज्जसंठाणाणं । हुंडसंठाणस्स ओरालियसरीरभंगो । वज्जरिसहवइरनारायणसरीरसंघडणस्स
 णग्गोहपरिमंडलसंठाणभंगो । सेसाणं संघडणाणं पि णग्गोहपरिमंडलसंठाणभंगो । णवरि
 असंखेज्जगुणहाणी णत्थि । णिरय-देवाणुपुव्वीणं सब्बत्थोवा संखेज्जगुणवद्धिउदीरया ।
 संखेज्जभागवद्धीए असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवद्धीए असंखेज्जगुणा हेदुणा । उवदेसेण ^{(का प्रती}
 'होदुणा उवदेसेण', ता प्रती 'होदु णा? उवदेसेण' इति पाठः।) पुण संखेज्जगुणा । अवद्धिदउदीरया असंखेज्जगुणा ।
 संखेज्जभागहाणुउदीरया संखेज्जगुणा । अवत्तव्वउदीरया विसेसाहिया । मणुस्साणुपुव्वीए
 देवाणुपुव्वीभंगो । तिरिक्खाणुपुव्वीए सब्बत्थोवा संखेज्जगुणवद्धीए उदीरया । संखेज्जभागवद्धीए
 असंखेज्जगुणा । असंखेज्जभागवद्धीए अणंतगुणा । अवद्धिदउदीरया असंखेज्जगुणा ।
 अवत्तव्वउदीरया संखेज्जगुणा । असंखेज्जभागहाणीए विसेसाहिया । एदेण बीजपदेण सेसाओ वि
 पयडीओ जाणिदूण भाणिदव्वाओ । एवं द्विदिउदीरणा समत्ता ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्य उदीरक सबसे स्तोक हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक
 असंख्यातगुणे हैं । तिर्यचायु और मनुष्यायुके चार पद हैं, उनका जानकर कथन करना चाहिए ।
 नरकगतिनामकर्मके संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक सबसे स्तोक हैं । संख्यातगुणहानिउदीरक
 संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक
 असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे
 हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं, क्योंकि यहाँ
 संख्यातवर्षायुष्क राशिकी प्रधानता है । देवगति नामकर्म की यह प्ररूपणा नरकगति के समान है ।
 तिर्यचगति नामकर्मके संख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं । अवक्तव्य उदीरक
 असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक
 असंख्यातगुणे हैं । संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागवृद्धिउदीरक
 अनंतगुणे हैं । अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं । असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे
 हैं । मनुष्यगति नामकर्मके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सबसे स्तोक हैं ।
 संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं । संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं ।
 अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं । संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं ।

संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानि के उदीरक संख्यातगुणे हैं। औदारिकशरीरके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक अनंतगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा नरकगतिके समानहै। आहारकशरीरके अवक्तव्यउदीरक सबसे स्तोक हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक संख्यातगुणे हैं। औदारिकशरीरअंगोपांगके असंख्यातगुणहानिके उदीरक सब से स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। आहारकशरीरअंगोपांगकी प्ररूपणा आहारकशरीरके समान है। वैक्रियिकशरीरकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। समचतुरस्रसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके असंख्यातगुणहानिउदीरक सबसे स्तोक हैं। अवक्तव्यउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातगुणहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। इसी प्रकार स्वाति, वामन और कुब्जक संस्थानोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए। हुण्डकसंस्थानकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान है। वज्रर्षभवज्रनाराचसंस्थानकी प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके समान है। शेष संहननोंकी भी

प्ररूपणा न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थानके समान है। विशेष इतना है कि उनके असंख्यातगुणहानि नहीं है। नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। किंतु वे हेतुपूर्वक उपदेशसे संख्यातगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। संख्यातभागहानिउदीरक संख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक विशेष अधिक हैं। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीकी प्ररूपणा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके समान है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके संख्यातगुणवृद्धिउदीरक सबसे स्तोक हैं। संख्यातभागवृद्धिके उदीरक असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागवृद्धिके उदीरक अनंतगुणे हैं। अवस्थितउदीरक असंख्यातगुणे हैं। अवक्तव्यउदीरक संख्यातगुणे हैं। असंख्यातभागहानिके उदीरक विशेष अधिक है। इस बीजपदसे शेष प्रकृतियोंकी भी जानकर प्ररूपणा करनी चाहिए। इस प्रकार स्थिति-उदीरणा समाप्त हुई।

एत्तो अणुभागउदीरणा दुविधा -- मूलपयडिउदीरणा, उत्तरपयडिउदीरणा चेदि। तत्थ मूलपयडिउदीरणा जाणिदूण भणिदव्वा। उत्तरपयडिउदीरणाए पयदं -- तत्थ इमाणि चउवीस अणुयोगद्वाराणि। तं जहा -- सण्णा, सव्वउदीरणा, णोसव्वउदीरणा, उक्कस्सउदीरणा, अणुक्कस्सउदीरणा, जहण्णउदीरणा, अजहण्णउदीरणा, सादिउदीरणा, अणादिउदीरणा, धुवउदीरणा, अद्धुवउदीरणा, एगजीवेण सामित्तं, कालो, अंतरं, णाणाजीवेहि भंगविचओ, भागाभागाणुगमो, परिमाणं, खेत्तं, फोसणं, णाणाजीवेहि कालो, अंतरं, भावो, अप्पाबहुअं, सण्णियासो चेदि। एदाणि भणिदूण पुणो भुजगारो पदणिक्खेवो (ता प्रतौ 'पुणो पदणिक्खेवो' इति पाठः।) वड्डी टाणं च (का प्रतौ 'व' इति पाठः।) वत्तव्वं। तत्थ ताव सण्णा वुच्चदे। सा दुविहा घादिसण्णा द्वाणसण्णा चेदि। तत्थ घादिसण्णा वुच्चदे। तं जहा -- आभिणिबोहिय-सुदणाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। ओहि-मणपज्जवणाणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवलणाणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा सव्वघादी। अचक्खुदंसणावरणीयस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चक्खु-ओहिदंसणावरणीयाणमुक्कस्सा सव्वघादी, अणुक्कस्सा सव्वघादी वा देसघादी वा। केवलदंसणावरण-णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिद्वा-पयलाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सव्वघादी। सादासादाउचउक्कस्स सव्व (का प्रतौ 'चउकसव्व' इति पाठः) णामपयडीणं उच्चाणीचागोदाणं उक्कस्सा अणुक्कस्सा च उदीरणा अघादी सव्वघादिपडिभागो। मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-

बारसकसायाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा च सब्बघादी। सम्मत्तस्स पंचंतराइयाणं उदीरणा उक्कस्सा अणुक्कस्सा च देसघादी। चदुसंजलण-णवणोकसायाणमुदीरणा उक्कस्सा सब्बघादी, अणुक्कस्सा सब्बघादी वा देसघादी वा। जेसिं (का प्रतो 'तेसिं' इति पाठः।) कम्माणमुदीरणाए देसघादित्तं सब्बघादित्तं च संभवदि तेसिं कम्माणं जहणिया उदीरणा णियमा देसघादी, अजहणिया देसघादी वा सब्बघादी वा। जेसिं कम्माणमुक्करिसया उदीरणा णियमा देसघादी तेसिं कम्माणं जहणिया अजहणिया वि उदीरणा णियमा देसघादी। जेसिं कम्माणमुक्कस्समणुक्कस्सं पि सब्बघादी तेसिं जहणमजहणं पि सब्बघादी। भवोवग्गहियाणमुदीरणा जहण्णा अजहण्णा च णियमा अघादी घादिपडिभागिया।

यहाँ अणुभागउदीरणा मूलप्रकृतिउदीरणा और उत्तरप्रकृतिउदीरणाके भेदसे दो प्रकारकी है। इनमें मूलप्रकृतिउदीरणाका कथन जानकर करना चाहिये। उत्तरप्रकृतिउदीरणा प्रकृत है -- उसमें ये चौबीस अनुयोगद्वार हैं। यथा -- संज्ञा, सर्वउदीरणा, नोसर्वउदीरणा, उत्कृष्टउदीरणा, अनुत्कृष्टउदीरणा, जघन्यउदीरणा, अजघन्यउदीरणा, सादिउदीरणा, अनादिउदीरणा, ध्रुवउदीरणा, अध्रुवउदीरणा, एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एक जीव की अपेक्षा काल, एक जीवकी अपेक्षा अंतर, नाना जीवोंकी की अपेक्षा भंगविचय, भागाभागानुगम, परिणाम, क्षेत्र, स्पर्शन, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और संनिकर्ष। इनकी प्ररूपणा करके पश्चात् भुजाकार, पदनिक्षेप, वृद्धि और स्थानका कथन करना चाहिये। उनमें पहले संज्ञाका कथन करते हैं। वह दो प्रकारकी है -- घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञा। उनमें घातिसंज्ञाकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- आभिनिबोधिकज्ञानावरण और श्रुतज्ञानावरणकी उत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट अनुभागउदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। अवधिज्ञानावरण और मनःपर्ययज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलज्ञानावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। अचक्षुदर्शनावरणकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चक्षुदर्शनावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। केवलदर्शनावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। साता व असाता वेदनीय, आयु चार, सब कर्मप्रकृतियों, तथा ऊँच व नीच गोत्रकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा अघाती है जो सर्वघातीके

प्रतिभागस्वरूप है। मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती है। सम्यक्त्व व पाँच अन्तराय प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट एवं अनुत्कृष्ट उदीरणा देशघाती है। चार संज्वलन और नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा सर्वघाती और देशघाती है। जिन कर्मोंकी उदीरणामें देशघातीपना और सर्वघातीपना सम्भव है उन कर्मोंकी जघन्य उदीरणा नियमसे देशघाती तथा अजघन्य उदीरणा देशघाती और सर्वघाती होती है। जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे देशघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य और अजघन्य भी उदीरणा नियम से देशघाती होती है। जिन कर्मोंकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट भी उदीरणा सर्वघाती होती है उन कर्मोंकी जघन्य और अजघन्य भी उदीरणा सर्वघाती होती है। भवोपगृहीत (आयु) प्रकृतियोंकी जघन्य व अजघन्य उदीरणा नियमसे अघाती होकर घातिप्रतिभागरूप होती है।

एत्तो सामित्ते भण्णमाणे तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्वाराणि। तं जहा -- पच्चयपरुवणा विवागपरुवणा ठाणपरुवणा सुहासुहपरुवणा चेदि। पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-तिदंसणमोहणीय-सोलसकसायाणमुदीरणा परिणामपच्चइया। को परिणामो? मिच्छत्तासंजम-कसायादी णवण्हं (का प्रतौ त्रुटितोऽत्र पाठः, म प्रतौ 'कसायादियाणं णवण्हं' इति पाठः।) णोकसायाणं उदीरणा पुव्वाणुपुव्वीए असंखेज्जदिभागो परिणामपच्चइया, पच्छाणुपुव्वीए असंखेज्जा भागा भवपच्चइया। सादासादवेदणीय-चत्तारिआउअ-चत्तारिगदि-पंचजादीणं च उदीरणा भवपच्चइया। ओरालियसरीरस्स उदीरणा तिरिक्ख-मणुस्साणं (का प्रतौ 'मणुस्स -' इति पाठः।) भवपच्चइया। वेउव्वियसरीरस्स उदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। आहार-सरीरस्स उदीरणा परिणामपच्चइया। तेजा-कम्मइयसरीराणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्सेसु परिणामपच्चइया। तिण्णमंगोवंगणं संघाद-बंधणाणं सगसरीरभंगो। समचउरससंठाणस्स उदीरणा मूलसरीरे भवपच्चइया आहारसरीरस्स उत्तरसरीरं विउव्विदतिरिक्ख-मणुस्साणं च सव्वेसिं परिणामपच्चइया। सेसपंचसंठाणाणमुदीरणा भवपच्चइया। छण्णं संघडणाणमुदीरणा भवपच्चइया। वण्ण-गंध-रसणामाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया। सीदुण्ण-णिद्ध-लहुक्खाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्ख-मणुस्साणं परिणामपच्चइया (का प्रतौ 'परिणामपच्चया ण', ता प्रतौ 'परिणामपच्चया (ण)' इति पाठः।)। कक्खड-गरुआणं उदीरणा एयंतभव (का प्रतौ 'एवंतभव-' इति पाठः।) पच्चइया।

मउअ-लहुआणमुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। चदुण्णमाणुपुव्वीणमुदीरणा भवपच्चइया। अगुरुलहुअ-थिराथिर-सुहासुहाणमुदीरणा देव-णेरइयाणं भवपच्चइया, तिरिक्खमणुस्साणं परिणामपच्चइया। उवघादादावुस्सास-अपसत्थविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-साहारण-पज्जत्तापज्जत्त-दुभग-दुस्सर- अणादेज्ज-अजसकिति-णीचागोदाणमुदीरणा एयंतभवपच्चइया। परघादुदीरणा आहारसरीरस्स उत्तरं विउव्विदस्स च परिणामपच्चइया, अण्णत्थ भवपच्चइया। उज्जोवुदीरणा उत्तरं विउव्विदस्स परिणामपच्चइया, सेसाणं भवपच्चइया। पसत्थविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परघादभंगो। णिमिण-तित्थयर-पंचंतराइयाणमुदीरणा परिणामपच्चइया। सुभग-आदेज्ज-जसगिति (ता प्रती 'अजगिति' इति पाठः।) -उच्चागोदाणमुदीरणा गुणपडिवण्णेसु परिणामपच्चइया, अगुणपडिवण्णेसु भवपच्चइया। को पुण गुणो (ता प्रती 'गुणगारो' इति पाठः।)? संजमो संजमासंजमो वा। एवं पच्चयपरुवणा गदा।

यहाँ स्वामित्वके कथन में ये चार अनुयोगद्वार है। यथा -- प्रत्ययप्ररूपणा, विपाकप्ररूपणा, स्थानप्ररूपणा और शुभाशुभप्ररूपणा। पाँच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, तीन दर्शनमोहनीय और सोलह कषाय; इनकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है।

शंका -- परिणाम किसे कहते हैं?

समाधान -- मिथ्यात्व, असंयम एवं कषाय आदिको परिणाम कहा जाता है।

पूर्वानुपूर्वी के अनुसार नौ नोकषायोकी असंख्यातवें भागप्रमाण उदीरणा परिणामप्रत्ययिक तथा पश्चादानुपूर्वीके अनुसार असंख्यात बहुभागप्रमाण उदीरणा भवप्रत्ययिक है। साता व असाता वेदनीय, चार आयुर्कर्म तथा चार गति और पाँच जाति नामकर्मोकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। औदारिकशरीरकी उदीरणा तिर्यचों व मनुष्योके भवप्रत्ययिक होती है। वैक्रियिक शरीरकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। आहारकशरीरकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है। तैजस व कार्मण शरीरोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंकी भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। तीन अंगोपांग, पाँच संघात व पाँच बन्धन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा अपने अपने शरीरके अनुसार है। समचतुरस्र संस्थानकी उदीरणा मूल शरीरमें भवप्रत्ययिक होती है

और आहारकशरीरी तथा उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले सभी तिर्यचों व मनुष्योंके उसकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक होती है। शेष पाँच संस्थानोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। छह संहननोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। वर्ण, गंध व रस नामकर्मोंकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। शीत, उष्ण, स्निग्ध और रूक्षकी उदीरणा देवों व नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों व मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। कर्कश और गुरु स्पर्शनामकर्मोंकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। मृदु और लघु नामकर्मोंकी उदीरणा आहारकशरीरी तथा उत्तरशरीरकी विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक और शेष जीवोंके भवप्रत्ययिक होती है। चार आनुपूर्वियोंकी उदीरणा भवप्रत्ययिक होती है। अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभ प्रकृतियोंकी उदीरणा देवों और नारकियोंके भवप्रत्ययिक तथा तिर्यचों और मनुष्योंके परिणामप्रत्ययिक होती है। उपघात, आतप, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, साधारण, पर्याप्त, अपर्याप्त, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति और नीच गोत्रकी उदीरणा सर्वथा भवप्रत्ययिक है। परघातकी उदीरणा आहारकशरीरी एवं उत्तरशरीर की विक्रिया करनेवालेके परिणामप्रत्ययिक तथा अन्यत्र भवप्रत्ययिक होती है। उद्योतकी उदीरणा उत्तर शरीर की विक्रिया करनेवाले जीवके परिणामप्रत्ययिक तथा शेष जीवों के भवप्रत्ययिक होती है। प्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वरकी प्ररूपणा परघातके समान है। निर्माण, तीर्थकर और पाँच अंतरायकी उदीरणा परिणामप्रत्ययिक है। सुभग, आदेय, यशकीर्ति और ऊँच गोत्रकी उदीरणा गुणप्रतिपन्न जीवोंमें परिणामप्रत्ययिक और अगुणप्रतिपन्न जीवोंमें भवप्रत्ययिक होती है।

शंका -- गुणसे क्या अभिप्राय है?

समाधान -- गुणसे अभिप्राय संयम और संयमासंयमका है।

इस प्रकार प्रत्ययप्ररूपणा समाप्त हुई।

विवागपरुवणागदाए जहा णिबंधो पुव्वं परुविदो तहा एत्थ विवागो वि परुवेयव्वो, भेदाभावादो।

विपाकप्ररूपणाकी विवक्षा होनेपर जैसे पहले निबन्धकी प्ररूपणाकी गयी है वैसे यहाँ विपाककी भी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उनमें कोई विशेषता नहीं है।

टाणपरुवणदाए आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उक्कस्सिया उदीरणा णियमा चउट्टाणिया। अणुक्कस्सा चउट्टाणिया तिट्ठाणिया बिट्ठाणिया एयट्टाणिया वा। सुदणाणावरण-ओहिणाणावरण-ओहिदंसणावरण-चदुसंजलण-णवुंसयवेदाणमाभिणिबोहियणाणावरणभंगो। मणपज्जवणाणावरण- केवलदंसणावरण-णिट्ठाणिट्ठा-पयलापयला-थीणगिद्धि-णिट्ठा-पयला-सादासादवेदणीय-मिच्छत्त-बारसकसाय-छण्णोकसाय-णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-पंचिंदियजादि-चदुसरीर- वेउव्विय-आहार-अंगोवंग-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयपाओग्गबंधण-संघाद-समचउरस-हुंसंटाण-वण्ण-रस-गंध-सीदु-सुण-णिद्ध-ल्लुक्ख-मउअ-लहुअ-अगुरुलहुअ-उवघाद-परघाद-उज्जोवुस्सास-पसत्थापसत्थ-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुभासुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदाणमुक्कस्सिया उदीरणा चउट्टाणिया। अणुक्कस्सा चउट्टाणिया तिट्ठाणिया दुट्ठाणिया वा। चक्खु-अचक्खुदंसणावरण-सम्मत्त-इत्थि-पुरिसवेदाणं पंचंतराइयाणं च उक्कस्सिया उदीरणा दुट्ठाणिया, अणुक्कस्सिया दुट्ठाणिया एयट्टाणिया वा। चक्खु-अचक्खुदंसणाणमुदओ जस्स वि एगमक्खरमत्थि तस्स णियमा एगट्टाणिया उदीरणा। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सिया अणुक्कस्सिया वा दुट्ठाणिया एक्कम्मि ट्ठाणे। तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुस्सगइ-चउजादि-ओरालियसरीरतदंगोवंग-ओरालियसरीर-बंधण-संघाद-चउसंटाण-छसंघडण-कक्खड-गुरु-आणुपुव्वीचउक्कआदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणमुक्कस्सा अणुक्कस्सा वा उदीरणा दुट्ठाणिया। तित्थयरस्स उक्कस्सा अणुक्कस्सा चदुट्टाणिया। एवमुक्कस्सिया ट्ठाणपरुवणा समत्ता।

स्थानप्ररूपणामें आभिनिबोधिक ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट उदीरणा नियमसे चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक, द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, चार संज्वलन और नपुंसकवेदकी प्ररूपणा आभिनिबोधिक ज्ञानावरणके समान है। मनःपर्यय ज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, बारह कषाय, छह

नोकषाय, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, चार शरीर, वैक्रियिक व आहारक अंगोपांग, वैक्रियक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीरोंके योग्य बंधन व संघात, समचतुरस्रसंस्थान, हुण्डक संस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मृदु, लघु, अगरुलघु, उपघात, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, निर्माण तथा नीच व ऊँच गोत्र; इनकी उत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक, त्रिस्थानिक और द्विस्थानिक होती है। चक्षु व अचक्षु दर्शनावरण, सम्यक्त्व, स्त्री व पुरुष वेद तथा पाँच अंतराय; इनकी उत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक तथा अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक और एकस्थानिक होती है। चक्षु व अचक्षु दर्शनावरणकी उदीरणा जिसके भी एक अक्षर है उसके नियमसे उनकी एकस्थानिक उदीरणा होती है। सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा एक स्थान में नियमसे द्विस्थानिक होती है। तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यचगति, मनुष्यगति, चार जातिनामकर्म, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, औदारिकशरीरबंधन, औदारिकशरीरसंघात, चार संस्थान, छह संहनन, कर्कश, गुरु, चार आनुपूर्वी, आतप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण शरीर; इनकी उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट उदीरणा द्विस्थानिक होती है। तीर्थंकर प्रकृतिकी उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट उदीरणा चतुःस्थानिक होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

जहण्णद्वाणमुक्कित्तणं वत्तइस्सामो। तं जहा -- सब्बकम्माणं पि अणुक्कस्सियाए उदीरणाए जं जस्स जहण्णियद्वाणं अभिवाहरिदं तं चेव जहण्णद्वाणं उदीरणाए द्वाणमभिवाहरियव्वं अजहण्णाए अणुक्कस्सभंगो। भवोवग्गहियाणं दुद्वाणियपडिभागियं तिद्वाणपडिभागियं चउद्वाणपडिभागियं चेदि अभिवाहरियव्वं। दुद्वाणिय-तिद्वाणिय-चउद्वाणिय ति च ण भणियव्वं। एवं टाणपरूवणा समत्ता।

जघन्य स्थानसमुत्कीर्तनका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है -- सभी कर्मोंकी अनुत्कृष्ट उदीरणामें जिसका जो जघन्य स्थान स्थान कहा गया है वही जघन्य स्थान उदीरणाका स्थान कहना चाहिए। अजघन्य उदीरणाकी प्ररूपणा अनुत्कृष्ट उदीरणाके समान है। भवोपगृहीत प्रकृतियोंके द्विस्थानप्रतिभागिक, त्रिस्थानप्रतिभागिक और चतुःस्थानप्रतिभागिक कहना चाहिये;

उनके द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक और चतुःस्थानिक नहीं कहना चाहिये। इस प्रकार स्थानप्ररूपणा समाप्त हुई।

एतो सुहासुहपरुवणं वत्तइस्सामो। तं जहा -- पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-अट्ठावीसमोहणीय-णिरयाउ-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-एइंदिय-वेइंदिय-तेइंदिय-चउ-रिंदियजादि-पंचसंटाण-पंचसंघडण-अप्पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-णिरयगइ-तिरिक्खगइ-पाओग्गाणु-पुव्वी-उपघात-परघात-अप्पसत्थविहायगदि-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-अथिर-असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णीचागोद-पंचंतराइयपयडीओ असुहाओ। सादावेदणीय-आउतिय-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंटाण-ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-पसत्थवण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुलहुअ-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पयडीओ सुहाओ। एवं सुहासुहपरुवणा समत्ता।

यहाँ शुभाशुभप्ररूपणा कहते हैं। वह इस प्रकार है -- पाँच ज्ञानावरण, नौ दर्शनावरण, असातावेदनीय, अट्ठाईस मोहनीय, नारकायु, नरकगति, तिर्यचगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पाँच संस्थान, पाँच संहनन, अप्रशस्त, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशकीर्ति, नीचगोत्र और पाँच अन्तराय; ये प्रकृतियाँ अशुभ हैं। सातावेदनीय, शेष तीन आयु, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, औदारिक, वैक्रियिक व आहारक शरीरांगोपांग, वर्जर्षभवज्जनाराचसंहनन, प्रशस्त वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर और उच्च गोत्र; ये प्रकृतियाँ शुभ हैं। इस प्रकार शुभाशुभप्ररूपणा समाप्त हुई।

